प्रयास

अनुभव साझेदारी में

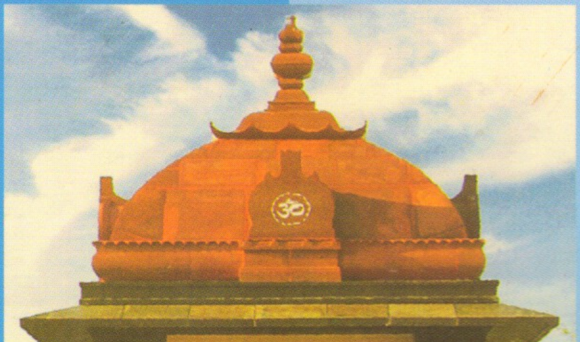

CAPART

भारतभू के अंतिम छोर पर, जहाँ तीन सागरों का संगम होता है, जहाँ कन्याकुमारी ने तपस्या की, जहाँ स्वामी विवेकानन्द को अपने जीवन का उदात्त ध्येय ज्ञात हुआ, ऐसे कन्याकुमारी में स्थित विवेकानन्द शिला स्मारक भारतवर्ष के आकांक्षाओं, उमंगों का दिव्य प्रतीक है । स्वामीजीके युगान्तरकारी ध्यान को यादगार करने के लिए इस स्मारक का निर्माण हुआ । यह स्मारक उनको मानो श्रद्धासुमन है ।

विवेकानन्द केन्द्र

निर्मल पाठक

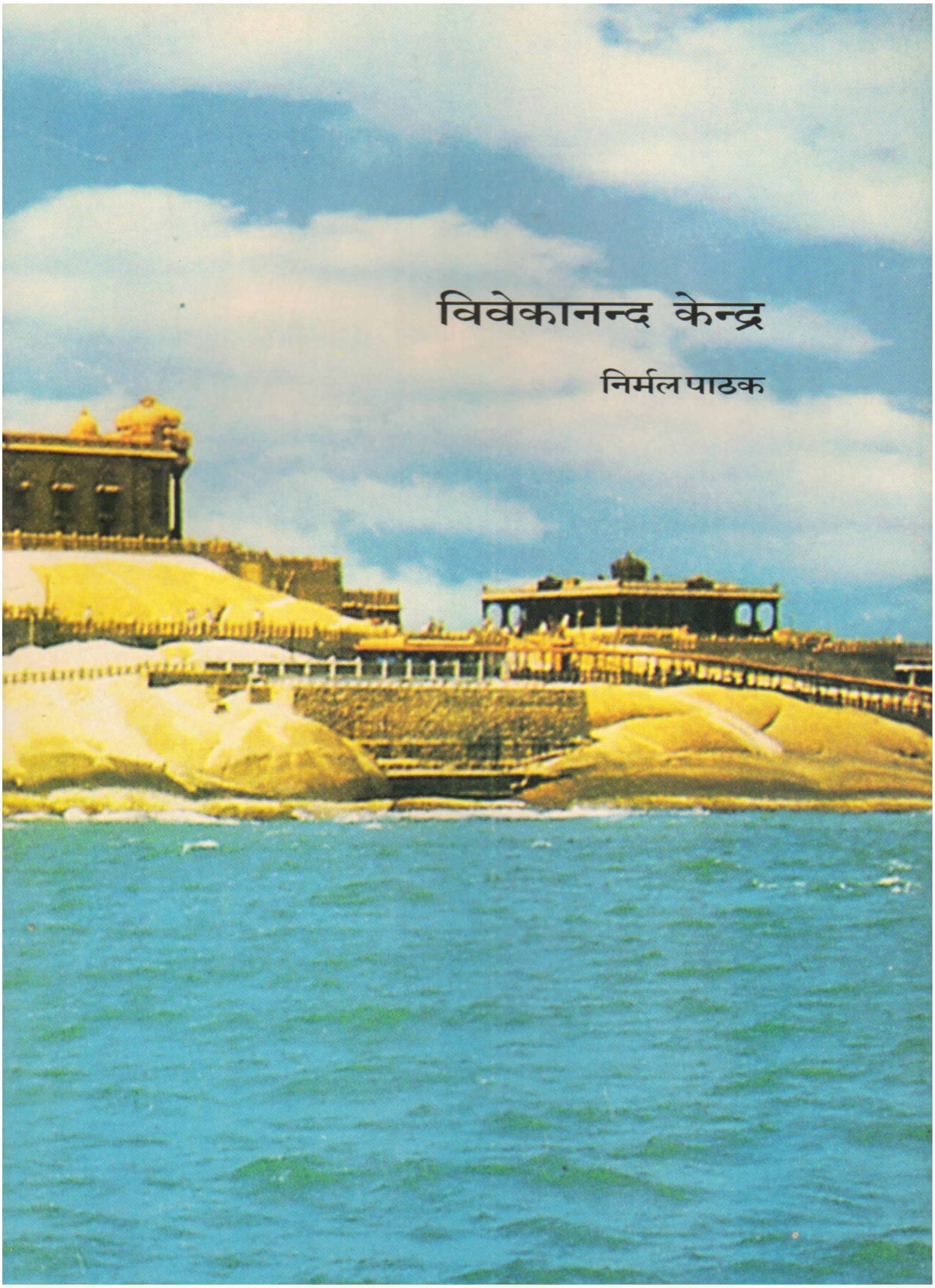

प्रस्तावना

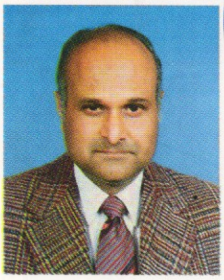

लोक कार्यक्रम और ग्रामीण प्रौद्योगिकी विकास परिषद् (कपार्ट) ने हमेशा ग्रामीण विकास में स्वयंसेवी संगठनों की भूमिका को सकारात्मक सहयोग प्रदान किया है, जो कि ऐसे संगठनों की गतिविधियों में एवं ग्रामीण क्षेत्रों के समग्र विकास में प्रेरक शक्तिवर्धक का काम कर रहा है।

कपार्ट के संरक्षण में अनेकों ख्याति प्राप्त परियोजनाएं शुरु की गई हैं। कपार्ट देश भर में फैली लगभग 8000 स्वयंसेवी संगठनों के साथ सम्पर्क स्थापित कर चुका है, तथा ग्रामीण विकास की प्रक्रिया में लाखों लोगों को शामिल कर चुका है। इस प्रक्रिया से कपार्ट कई उन ग्रामीण प्रौद्योगिकियों की रक्षा कर रहा है, उनका विकास कर रहा है और प्रचार–प्रसार कर रहा है, जो या तो भुला दी गई होती हैं या लोगों के ध्यान में नहीं आ पातीं। अभी भी कपार्ट की कई ऐसी उपलब्धियाँ हैं जो लोगों के ध्यान में नहीं लाई गई हैं। इस पुस्तक का एक उद्देश्य स्वयंसेवी कार्यक्रमों के माध्यम से ग्रामीण विकास को प्रोत्साहित करने में अदा की गई कपार्ट की सकारात्मक भूमिका को प्रकाश में लाना है। इस पुस्तिका से यह भी उम्मीद की जाती है कि ऐसे प्रकाशनों से युवा और अन्य स्वयंसेवी संस्थाएं ग्रामीण विकास के काम में आगे आने के लिए उत्साहित होंगी। किसी संगठन की शक्ति केवल उसके भवन और नियुक्त कर्मचारियों की संख्या में निहित नहीं रहती है। दरअसल इसकी कसौटी है जनता द्वारा जनता के लिए टिकाऊ प्रणालियों के विकास करने और लोगों को गतिशील करने की संगठन की क्षमता। विवेकानंद केंद्र एक ऐसा ही सफल संगठन है।

इस पुस्तिका में विकास के विस्तृत मुद्दों पर प्रकाश डाला गया है। साथ में, इसमें कपार्ट की विभिन्न परियोजनाओं का विवरण भी दिया गया है। मुझे उम्मीद है कि ये सफल परियोजनाएं सावधानीपूर्वक विचार–मनन के बाद, न सिर्फ विवेकानंद केंद्र वरन् ग्रामीण विकास के क्षेत्र में सभी चुनौतियों का सामना कर रही कई अन्य स्वयंसेवी संस्थाओं को भी प्रेरित करेंगी।

अन्त में, मैं श्री संदीप बागची, उप–महानिदेशक, कपार्ट और श्री सी.एल. कटारिया, सहायक निदेशक सहित उनके अधिकारीगण के प्रयासों की सराहना करना चाहूँगा, जिन्होंने इस प्रकाशन को संभव बनाया।

धन्यवाद।

रंगन दत्ता,
महानिदेशक
कपार्ट

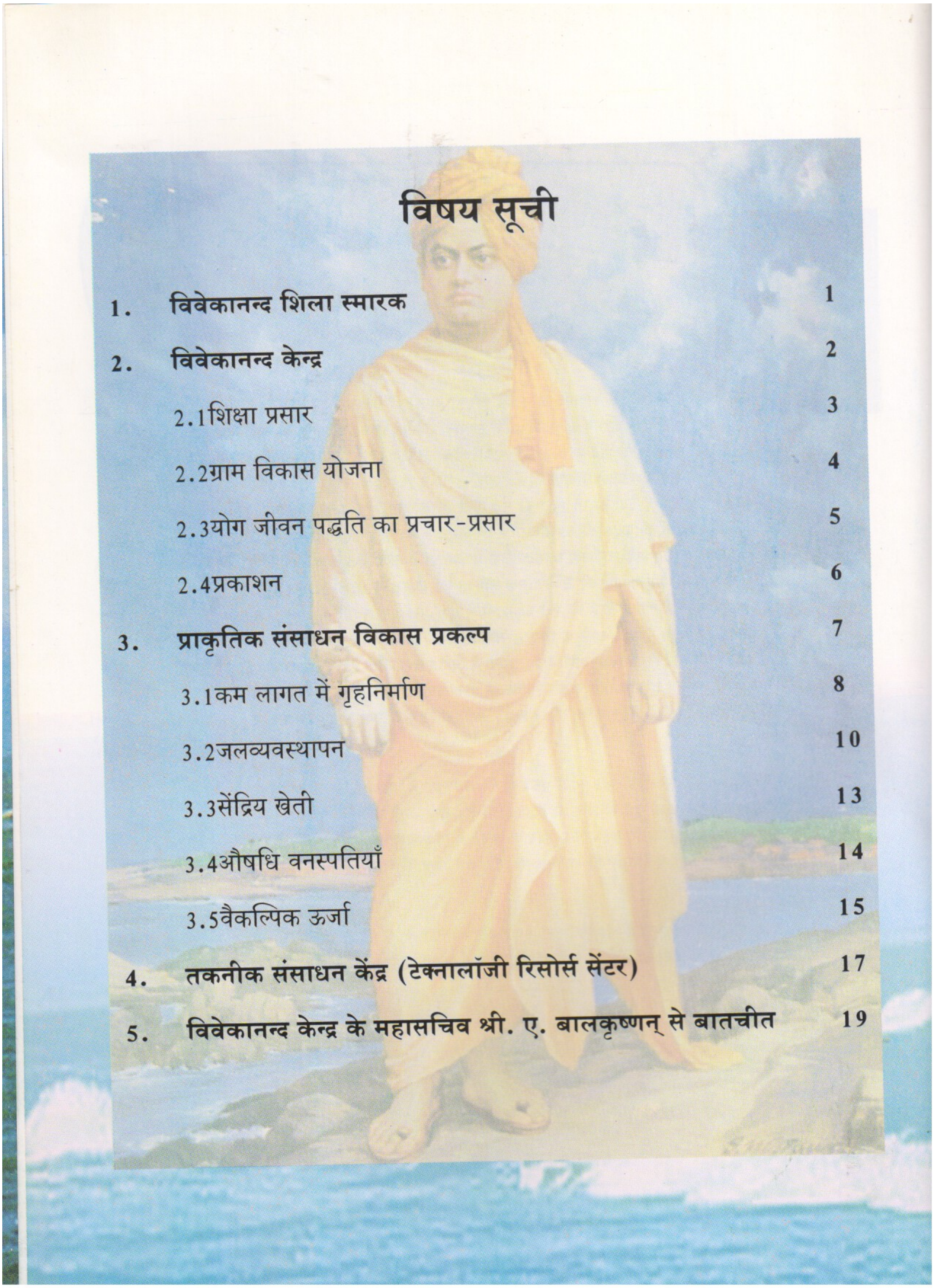

विषय सूची

1. विविकानन्द शिला स्मारक 1

2. विवेकानन्द केन्द्र 2

2.1 शिक्षा प्रसार 3

2.2 ग्राम विकास योजना 4

2.3 योग जीवन पद्धति का प्रचार-प्रसार 5

2.4 प्रकाशन 6

3. प्राकृतिक संसाधन विकास प्रकल्प 7

3.1 कम लागत में गृहनिर्माण 8

3.2 जलव्यवस्थापन 10

3.3 सेंद्रिय खेती 13

3.4 औषधि वनस्पतियाँ 14

3.5 वैकल्पिक ऊर्जा 15

4. तकनीक संसाधन केंद्र (टेक्नालॉजी रिसोर्स सेंटर) 17

5. विवेकानन्द केन्द्र के महासचिव श्री. ए. बालकृष्णन् से बातचीत 19

1. विवेकानन्द शिला स्मारक

"मानव सेवा ही माधव सेवा है," स्वामी विवेकानंद के इस कथन को ध्येय वाक्य मानकर उनके एक परम अनुयायी श्री एकनाथ रानडे ने 1972 में भारत भूमि के अंतिम छोर कन्याकुमारी में विवेकानंद केंद्र की स्थापना की थी । श्री एकनाथ रानडे महाराष्ट्र के अमरावती से थे । उनका व्यक्तित्व, उद्देश्य प्राप्ति के लिए उनकी लगन और राष्ट्र के प्रति समर्पण की भावना का अंदाज विवेकानंद शिला स्मारक को देखकर आसानी से लगाया जा सकता है । यह निश्चित ही श्री एकनाथ रानडे के प्रयासों का परिणाम था कि समुद्र के बीच शिला पर निर्मित यह स्मारक आज दुनियाभर के लिए आकर्षण व प्रेरणा का स्त्रोत बन गया है । बताते हैं की समुद्र के बीच स्थित इस शिलाखंड पर तीन दिन ध्यानमग्न रहने के बाद ही स्वामी विवेकानंद को आत्मज्ञान की प्राप्ति हुई थी ।

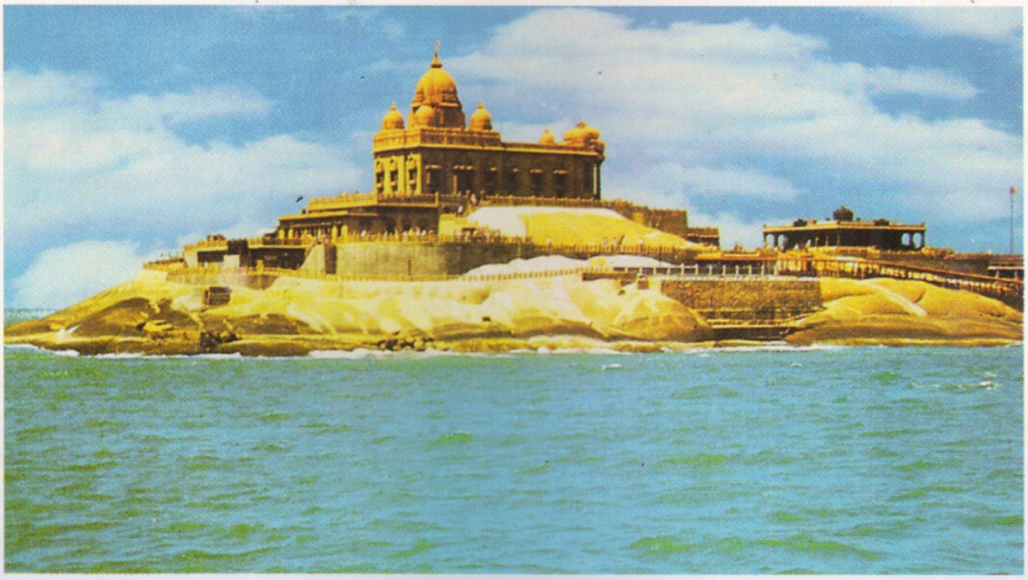

विवेकानन्द शिला स्मारक

1963 में स्वामी विवेकानंद की जन्मशताब्दी मनाने के अवसर पर ही शिला स्मारक निर्माण के लिए धन एकत्र करने की शुरुआत हुई और 1970 में यह "शिला स्मारक" राष्ट्र को समर्पित किया गया ।

2. विवेकानन्द केन्द्र

स्वा. विवेकानन्द – केन्द्र के प्रेरणा स्त्रोत

राष्ट्रीय स्मारक के निर्माण के बाद स्वामी विवेकानन्द के सन्देश को मूर्त रूप में लाने के लिए विवेकानन्द केन्द्र की 1972 में स्थापना हुई । इसमें ध्येयनिष्ठ कार्यकर्ताओं की एक सन्यासेत्तर परम्परा के निर्माण के अन्तर्गत ऐसी श्रृंखला का निर्माण हो रहा है जिसमें समर्पित निष्ठावान एवं प्रतिभा सम्पन्न युवक युवतियों का चयन किया जाता है । इन कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षण के बाद देश के विभिन्न भागों में सेवा कार्य के लिये भेजा जाता है ।

आज पूरे भारतवर्ष में केन्द्र की 190 शाखाएँ हैं। 'त्याग एवं सेवा' इन आदर्शद्वयों का प्रचार-प्रसार करने हेतु कई सेवा-प्रकल्पों का संचालन विवेकानन्द केन्द्र करता है । इनमें (i) शिक्षा, जो चरित्र निर्माण कर सके; (ii) ग्रामीण विकास प्रकल्प, जो सांस्कृतिक सेवा माध्यमों को उजागर करता है; (iii) योग जो समाज को योग्य जीवनशैली का परिचय देता है और (iv) मनुष्य निर्माण एवं राष्ट्र निर्माण इन दो आदर्शों को अनुप्राणित करने के लिये विविध भाषाओं में पुस्तकों और पत्रिकाओं का प्रकाशन ये प्रमुख प्रकल्प है ।

मा. एकनाथजी – केन्द्र संस्थापक

2.1 शिक्षा प्रसार

स्कूली शिक्षा के साथ सांस्कृतिक व आध्यात्मिक शिक्षा के ज़रिये मानव को माधव बनाने के उद्देश्य को लेकर केंद्र आवासी स्कूलों के अलावा गांवों में बालवाडियाँ भी चला रहा

विवेकानन्द केन्द्र विद्यालय के विद्यार्थी – अरूणाचल प्रदेश

है । आवासी स्कूल ज्यादातर पूर्वोत्तर के राज्यों में हैं जहां दुर्गम इलाकों में सरकार भी इस समस्या के समाधान हेतु स्वयंसेवी संगठनों पर ही निर्भर है । फिलहाल अरुणाचल प्रदेश में केंद्र 17 आवासी स्कूल चला रहा है जहां करीब 2500 बच्चे शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं । गैर आवासी स्कूल असम के डिब्रूगढ़, तिनसुकिया व गोलाघाट में, अंडमान निकोबार के पोर्टब्लेयर में व कन्याकुमारी के विवेकानंदपुरम में हैं ।

2.2. ग्राम विकास योजना

'उपेक्षित ग्रामीण जनसमूह के जागरण द्वारा ही नये भारत का अवतरण होगा' ऐसा स्वामीजी कहा करते थे । यह बात ध्यान में रखकर तमिलनाडु के कन्याकुमारी, तिरुनेलवेली,

बुजुर्ग को गोद लेना कार्यकम

तुतिकोरीन और रामनाथपुरम् जिलों में केन्द्र द्वारा ग्राम विकास कार्यक्रम चल रहा है ।

दीपपूजा, कोविलपटट्ी

बाल संस्कार वर्ग

सामाजिक चेतना और सांस्कृतिक नव-जागरण लाने हेतु विभिन्न क्रिया-कलाप अपनाये गये हैं, जैसे स्वास्थाहार युक्त बालवाड़ियां, युवा प्रेरणा शिविर, ग्रामीण पुस्तकालय, चिकित्सा सेवा, सांस्कृतिक वर्ग एवं प्रतियोगितायें, बाल संस्कार वर्ग, महिलाओं में जागरण हेतु दीप पूजा, प्रौढ़ तथा आँखों से पीड़ित लोगों का उपचार, अमृत सुरभि आदि । बिहार के सिंहभूम जिले में, कर्नाटक के बेंगलूर जिले में तथा मध्य प्रदेश के ग्वालियर जिले में भी ग्राम विकास का कार्य चल रहा है ।

2.3. योग जीवन पद्धति का प्रचार-प्रसार

आधुनिक जीवन में योग के महत्त्व को नकारा नहीं जा सकता । विवेकानन्द केन्द्र का योग विभाग, योग के समग्र प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण

प्राणायाम वर्ग

योगदान दे रहा है । नियमित योग प्रशिक्षण शिविर और आध्यात्मिक साधना शिविर अनेक केन्द्रों पर आयोजित किये जाते हैं । योग की विभिन्न पद्धतियां समाज के सभी वर्गों को शारीरिक एवं मानसिक दृष्टि से स्वस्थ रखने में उपयोगी सिद्ध हुई हैं ।

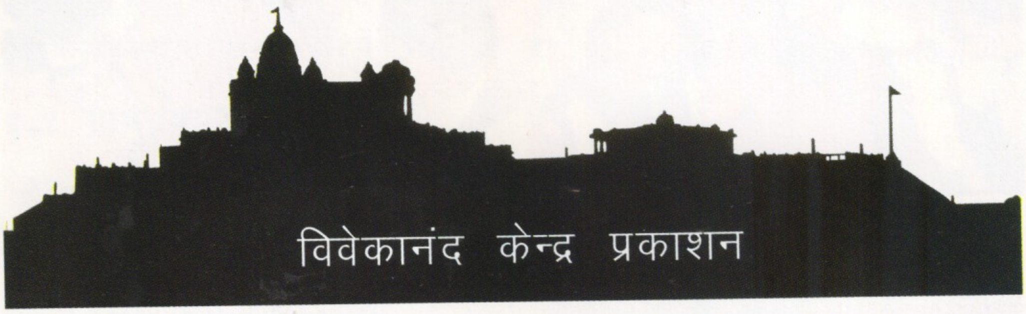

2.4. प्रकाशन

पत्रिकायें एवं पुस्तकें विचारों और आदर्शों के प्रचार-प्रसार के सशक्त माध्यम है । केन्द्र के विविध प्रकाशन सुविधा पाठकों को जीवन दर्शन के प्रति आकर्षित करने तथा उनके आदर्श विचारों को सुदृढ़ करने में सहायक होते हैं । केन्द्र द्वारा भारतीय संस्कृतिक और आध्यात्मिक विषयों पर अनेक भाषाओं में समय-समय पर पुस्तकें प्रकाशित की जाती है।

3. प्राकृतिक संसाधन विकास प्रकल्प

संक्षेप में विके-नारडेप (Vivekananda Kendra - Natural Resources Development Project) से परिचित यह प्रकल्प विवेकानन्द केन्द्र का एक अविभाज्य अंग है । संसाधनों की कमी और बढ़ता उपभोक्तावाद इन दो परस्पर विरोधी तत्वों के परिपेक्ष में उभरी समस्याओं के समाधान के लिए नये पर्यायों को संबोधित करना इस प्रकल्प का कार्य है ।

स्वदेशी, परंपरागत विज्ञान और तंत्रज्ञान को आधुनिक विज्ञान और तंत्रज्ञान से जोड़कर उभरे तत्वों को गुजागर करने के लिए कार्यशालाओं, प्रदर्शनियों, शिविरों और प्रकाशनों का आयोजन विके-नारडेप करता है ।

इस प्रकल्प ने सरल और पर्यावरण के अनुकूल क्षेत्रज्ञान जो सामान्यजन अपना सके उसे बढ़ावा देने के लिए कई समविचारी संस्थाओं से संपर्क बना रखा है । समय की परीक्षा में खरे उतरे पद्धतियों को लोगों की भलाई के लिये अंगीकृत करना हमारा ध्येय है ।

नुक्कड नाटक द्वारा शिक्षा

विके-नारडेप इन क्षेत्रों में कार्य कर रहा है:

1 कम लागत में गृह निर्माण

2 जलव्यवस्थापन

3 सेंद्रिय खेती

4 औषधीयुक्त वनस्पति

5 पारम्पारिक उर्जास्तोत्रों का प्रचार-प्रसार

3.1. कम लागत में गृहनिर्माण

गांवों में रहनेवाले अपेक्षाकृत कमजोर तबके के लोगों को कम लागत में पर्याप्त सुविधा उपलब्ध कराने की अपनी योजना को विवेकानंद केंद्र ने "बेघरबारों को घर" नाम दिया है । केंद्र मुख्यालय के परिसर में कम लागत के मकान बनाने के लिए किए गए शुरुआती परीक्षणों के बाद केंद्र ने श्री लौरी बेकर की तकनीक को सर्वश्रेष्ठ पाया है । कम लागत के मकान बनाने की श्री लौरी बेकर की तकनीक महात्मा गांधी से मिली प्रेरणा पर आधारित है । महात्मा गांधी का मानना था कि एक आदर्श गांव में आदर्श घर वहां पांच किमी. के दायरे में उपलब्ध सामग्री से बनाया जा सकता है । लौरी बेकर का मानना है कि कम से कम जगह में कम से कम लागत पर अधिक से अधिक सुंदर घर बनाये जा सकते हैं ।

कम लागत के मकान

नारडेप का आफिस

नारडेप से पिछले कई वर्षों से जुड़े श्री. जी. वासुदेव ने बताया कि इस तरह के मकानों में हम सिमेंट के अधिक उपयोग को हतोत्साहित करते हैं । उनका कहना था कि ईंट की दीवार पर यदि सिमेंट का प्लास्टर न भी किया जाय तो भी उसकी क्षमता पर कोई असर नहीं पड़ता, इसके विपरीत बिना प्लास्टर की हुई दीवार ज्यादा सुंदर दिखाई देती है ।

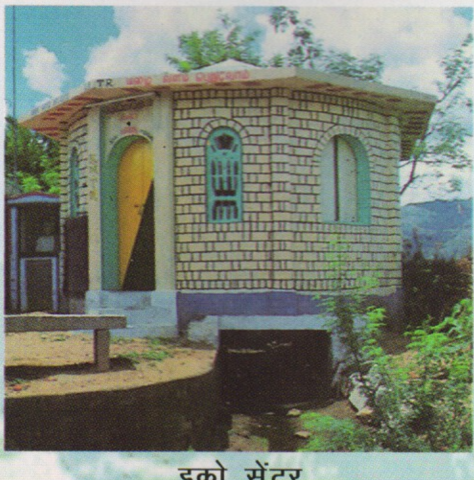

इको सेंटर

लौरी बेकर तकनीक सीधे-सपाट लिंटल वाली छतें डालने के भी खिलाफ है । फिलर स्लॅब, एसईबी (स्टॅबिलाईज्ड अर्थ ब्लॉक) अर्धचंद्राकार खिड़कियां और दरवाजे - फेरोसिमेंट के और बिना फ्रेम-यह भी इन घरों की विशेषता है ।

मकान के निर्माण में लाभार्थी भी भाग लेता है । केंद्र कन्याकुमारी

सहित तमिलनाडु के तिरुनेलवेली और तुतीकोरीन जिलों में सौ से ऊपर इस तरह के मकान बना चुका है । हाल ही में उड़ीसा में तुफान से हुए विनाश के बाद केन्द्र वहां भी बालासोर जिले में मकान बना रहा है ।

विवेकानन्द केन्द्र का तकनीक संसाधन केंद्र लोगों को और सेवा संघटनों को कम लागत के मकान बनाने की विभिन्न तकनीकों से अवगत कराता है ।

3.2. जलव्यवस्थापन

तमिलनाडु में कभी 40 हजार के आस पास बड़े-बड़े तालाब थे, जिनका उपयोग सिंचाई के साथ ही पीने के पानी और दूसरी जरूरतों को पूरा करने के लिए होता था । इनका रखरखाव और प्रबंधन पूरी तरह समुदाय पर निर्भर था । भारत में अंग्रेजों के आगमन के बाद उन्होंने इन तालाबों का सरकारीकरण कर बाबुओं के हाथ सौंप दिया । धीरे-धीरे पिछले कई दशकों में इनका अस्तित्व ही समाप्त होने के कगार पर पहुँच चुका है । पिछले कुछ वर्षों में देश के

पूरा गांव कार्यरत – जिला रामनाथपुरम्

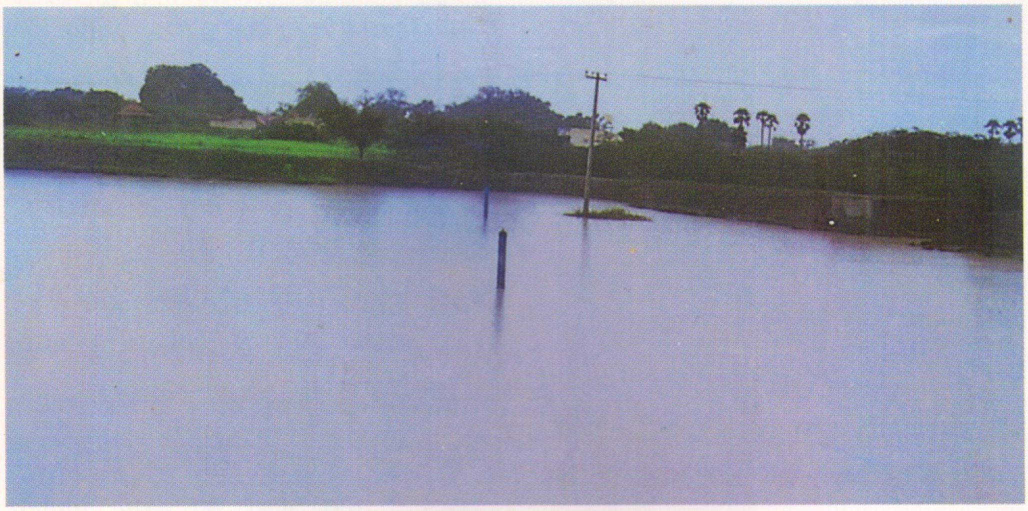

ऊरनी तैयार होने के बाद भूजल संग्रहण

विभिन्न भागों में पानी की किल्लत और सूखे की स्थितियों से तमिलनाडु में भी लोगों का ध्यान जल प्रबंधन की ओर गया । इस चिंता में सहभागी बनते हुए विवेकानंद केंद्र ने राज्य में पीने के पानी की समस्या से सबसे बुरी तरह प्रभावित रामनाथपुरम् जिले पर अपना ध्यान केंद्रित किया ।

रामनाथपुरम्-यहां पानी की एक-एक बूंद मायने रखती है । कभी इस जिले में ही सर्वाधिक तालाब हुआ करते थे । लेकिन पिछले कुछ वर्षों में हालत यह थी कि सिंचाई तो दूर, पीने के लिए पानी मिलना भी यहां दुर्लभ होने लगा था । पीने के पानी की उपलब्धता को यदि आधार माना जाय तो रामनाथपुरम् देश के सर्वाधिक पिछड़े जिलों में होगा । केंद्रीय भू-जल बोर्ड के एक सर्वेक्षण में पाया गया कि जिले के केवल 100 किमी. क्षेत्र में ही पानी पीने के योग्य है । बाकी पूरा क्षेत्र खारे पानी से भरा हुआ है । जिले में औसतन 800 मिमी. वर्षा होती है । विवेकानंद केंद्र ने इसे ही उम्मीद का आधार बनाकर वर्षा के पानी को पीने व सिंचाई के उपयोग में लाने की तकनीक विकसित करने व उसमें समाज की भागीदारी सुनिश्चित करने के प्रयास शुरु किये ।

कई विकल्पों पर अनुसंधान व परीक्षण के बाद केंद्र ने पाया कि परंपरागत तालाबों, जिन्हें स्थानीय भाषा में ''ऊरनी'' कहा जाता है, को ही उन्नत व आवश्यक सुधार कर उपयोग लायक बनाया जा सकता है ।

चूँकि अधिकांश गांवों में इस तरह के तालाब थे । इसलिए इसमें अतिरिक्त खर्च बढ़ने की भी आशंका नहीं थी । जिन वजहों से लोग इनका उपयोग नहीं कर रहे थे उनमें मुख्य कारण इन तालाबों का ठीक रखरखाव न होना था । तालाबों की दीवारे ढह जाने से हर तरह का कूड़ा-करकट वहां पहुंच रहा था और धीरे-धीरे जलग्रहण की उनकी क्षमता कम हो रही थी । तालाबों को ज्यादा गहरा नहीं किया जा सकता था, क्योंकि कुछ जगह नीचे चूने (Lime) के पत्थर थे । तालाबों में वर्षा का पानी पहुंच नहीं रहा था, क्योंकि पानी पहुंचाने वाली नालियां अवरुद्ध पड़ी थीं ।

एक आरंभिक सर्वेक्षण के बाद विवेकानंद केंद्र ने पहले गांव वालों से बात की और उसके बाद कपार्ट से संपर्क साधा । केंद्र के एक प्रमुख कर्ताधर्ता श्री जी वासुदेव के मुताबिक तालाबों को सुधारने से पहले गांव वालों को साथ लेना आवश्यक था । क्योंकि केंद्र या कपार्ट हर बार यह जिम्मेदारी नहीं उठा सकते । गांव वालों को इसमें भागीदार बनाकर यह अहसास कराया गया कि यदि वे

जल प्रबंधन – कन्याकुमारी देवालय तालाब

इन 'ऊरनियों' का रखरखाव ठीक से करेंगे तो उन्हीं की समस्यायें दूर होंगी ।

कपार्ट से सहायता मंजूर होने के बाद गांव वालों को साथ लेकर 'ऊरनी' सुधार कार्यक्रम शुरु किया। श्री वासुदेव के अनुसार तट्टानकुडिरप्पु गांव में 1991 में पहली ऊरनी तैयार हुई । ऊरनी के साथ रेत का फिल्टर बेड और कुँआ भी खोदा गया । इस काम के बाद मुदकुलत्तुर ब्लाक में 5-6 गांवो में यह काम किया गया ।

गत साल केन्द्र ने कूपनलिकाओं को कृत्रिमतापूर्वक पुनरुज्जीवित (artificial recharging of tube wells) करने का यशस्वी प्रयोग सेल्वनायकपुरम् और कोट्टकुडि गांवों में किया । इसके अलावा कन्याकुमारी जिले में 3 मंदिरों के तालाबों का जीर्णोद्धार केन्द्र ने किया है । यह काम देखकर अब अनेक लोग और गांववाले ऐसा काम उनके यहाँ भी होना चाहिये ऐसा कह रहे हैं।

3.3.सेंद्रिय खेती(OrganicFarming)

खेती में रासायनिक खाद का प्रयोग प्राकृतिक श्रृंखला को विघटित करता है । इस कारण फसलों की जंतु निरोधक क्षमता घट जाती है । इसके इलाज के लिये फिर रासायनिक जंतु नाशक का उपयोग किया जाता है जिसके कारण न केवल फसल या मिट्टी अपितु पूरा पर्यावरण भी दूषित होता है ।

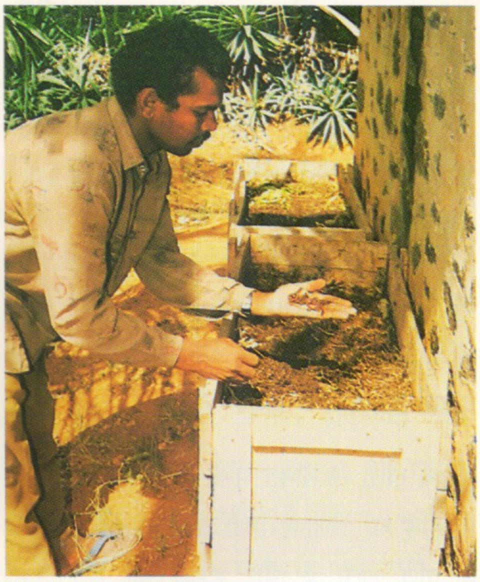

केचुओं के द्वारा खाद

ऐसे कठिन परिस्थिति में सहजता से उपलब्ध सेंद्रिय खाद और जंतुनाशक वरदान साबित हुए हैं।

सेंद्रिय खाद – अझोला व ब्लू ग्रीन अल्गै

विके-नारडेप ने विविध खाद पद्धतियाँ जैसे (i) फ़ार्म यार्ड मॅन्युअर (ii) बायोगैस स्लरी (iii) वर्मी काम्पोस्ट (केंचुओं के द्वारा खाद) और (iv) नाडेप काम्पोस्ट विकसित कराई है ।

इसके अलावा अझोला (Azolla) व ब्लू ग्रीन अल्गै (Blue Green Algai) ये बायो फर्टीलाइजर और विविध सेंद्रिय जंतुनाशक का प्रचार-प्रसार विके-नारडेप करता है ।

सेंद्रिय खेती से लागत मूल्य में कमी और फसल में वृद्धि के अलावा मिट्टी के लाभदायक तत्वों में वृद्धि होती है और फसल का स्तर उंचा होता है ।

दादी माँ की जड़ी बूटीयों का बटुआ

3.4. औषधि वनस्पतियाँ

अंग्रेजी दवाओं के अपायकारक नतीजों से मरीज स्वस्थ होने के बजाय साईड इफेक्ट्स् से त्रस्त हो रहा है । इसलिये वनस्पति औषधि से

औषधी वनस्पतियाँ

फली-फूली वसुंधरा से रिश्ता रखनेवाले हम, अब दादी माँ की जड़ी-बूटियों का बटुआ फिर से याद कर रहे हैं ।

अगस्त्य मुनी – सिद्ध औषधी के जनक

अरसो से भूली हुई और अभी तक मुफ्त में उपलब्ध ये जड़ी-बूटी आज हमारा ध्यान आकर्षित कर रही हैं । अंधाधुंध जंगल कटाई इनके विकास को मर्यादा डाल रही है । व्यापार के दृष्टि से कुछ राष्ट्र आक्रमणकारी एकस्व और स्वामित्व के जरिए इन वनौषधियों को अपनी खोज समझ रहे हैं । इन हमलों से औषधी वनस्पतियों को बचाना आज अनिवार्य हुआ है ताकि युग-युग से चले आ रहे ज्ञानभंडार की उचित रक्षा हो सके ।

ऊपर बताए उद्दिष्टों का महत्व समझकर वि.के.नारडेप ने जड़ी-बूटियों का डाक्युमेन्टेशन, अव्यापारिक तौर पर उत्पादन और उपयोग शुरु किया है । वैज्ञानिक संस्थाओं, अन्य संघटनों और सामान्य लोगों के साथ रहे अपने सम्पर्क के जरिए वि.के. नारडेप आरोग्य सेवाकर्मी और सिद्ध वैद्यों का एक नेटवर्क स्थापन कर रहा है जिससे (i) वनौषधि-वाटिकाएँ बढाना (ii) ऐसी वाटिकाओं का संवर्धन करने के लिए लोगों को प्रशिक्षित करना और (iii) वनौषधि को नित्य जीवन में उपयोग में लाना-संभव हो सकेगा ।

इस कार्यक्रम के लिए वि.के. नारडेप ग्रीन हेल्थ होम चलाता है और साथ में अलग-अलग प्रशिक्षण शिविर आयोजित करता है ।

3.5. वैकल्पिक ऊर्जा

ऊर्जा और पर्यावरण की समस्या को देखकर वि.के. नारडेप ने अपने काम की शुरुवात (1986) बायोगैस प्रचार और प्रसार से करवायी ।

जागृति शिविर, बायोगैस उपभोक्ता शिविर और मेसन प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन करके नारडेप ने तामिलनाडु के 3 जिलों में मिलकर अब

तक 1500 संयंत्र बनवायें हैं । साथ में गैर पारम्परिक उर्जा स्त्रोत मंत्रालय, भारत सरकार की सहायता से निम्न तीन पुस्तिकाएं निकाली हैं ।

(i) बायोगैस मरम्मत व रखरखाव पर कार्यविधि पुस्तिका

(ii) बायोगैस उपभोक्ता निर्देश पुस्तिका और

(iii) बायोगैस संयंत्र-निर्माण निर्देश

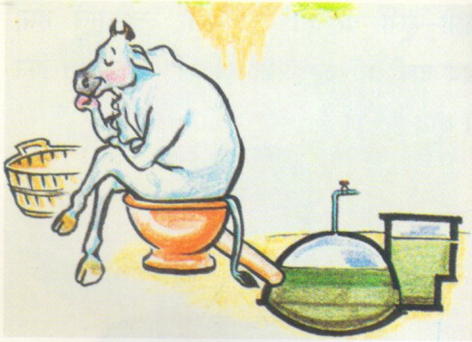

बायोगैस – संयंत्र

सौर ऊर्जा के उपकरण

साथ ही साथ वि.के. नारडेप ने कपार्ट की सहायता से बायोगैस प्लांट का अपना एक मॉडल-विनकॅप विकसित किया है, जिसका लागत मूल्य अन्य मॉडल की तुलना में कम रखने का प्रयास है ।

बायोगैस के अलावा केन्द्र सौर उर्जा, निर्धुर चूल्हा एवं एनर्जी प्लांटेशन का भी प्रचार और प्रसार करता है ।

4. तकनीक संसाधन केंद्र (टेक्नालॉजी रिसोर्स सेंटर)

वि.के. नारडेप के समर्पित भाव से चले प्रयासों को देखकर कापार्ट, नई दिल्ली ने विवेकानंद केंद्र को Technology Resource Centre के रूप में मान्यता और सहायता दी है । कन्याकुमारी से चार कि.मी. की दूरी पर कलुविलई गांव में करीब 3 एकड़ क्षेत्र में यह केन्द्र बना है ।

तकनीक संसाधन केंद्र का कार्यालय

केंद्र में तकनीकी जानकारी उपलब्ध कराने के साथ ही ग्रामीण विकास से जुड़े सरकारी व गैर-सरकारी संगठनों के प्रतिनिधियों को समय-समय पर प्रशिक्षण देने की सुविधा उपलब्ध कराने की व्यवस्था भी की जा रही है । इसके लिये यहाँ कार्यालय, रहने के लिये होस्टेल, लेक्चर हॉल, संगणक, मदर नर्सरी इत्यादि की व्यवस्था है । यहाँ अधिकतर उर्जा का उपयोग गैर पारंपरिक स्त्रोतों से किया जाता है । सौर उर्जा और पवनचक्की से मिलनेवाली उर्जा भवनों को दी जाती है ।

नारडेप के प्रभारी स्वामी कृष्णानंद का दावा है कि आने वाले समय में प्राकृतिक संसाधनों से ग्रामीण विकास की अवधारणा को साकार करने के लिए यह केंद्र भारत के इस दक्षिणी भाग में महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगा।

(i) यहां पर केंद्र रह सकने योग्य, आरामदायक और कम खर्च के मकानों के निर्माण की तकनीकी उपलब्ध करता है ।

(ii) यहाँ किसानों को बताया जाता है की वे आसपास के कचरे को ही बेहतर खाद में बदल सकते हैं और रासायनिक खाद से पैदा होने वाले विकारों से बच सकते हैं ।

(iii) जल संग्रहण के प्रति लोगों को जागरुक करने के साथ ही केंद्र भू-जल संग्रहण बनाये रखने के तकनीकों से लोगों को अवगत कराता है ।

(iv) इसी परिसर में परंपरागत औषधियों के उपयोग की जानकारी देने के लिए करीब 400 प्रजाति के पौधे उपलब्ध हैं । इन पौधों से लगभग हर तरह के रोगों का उपचार किया जा सकता है । यह सब जानकारी देने की व्यवस्था तकनीक संसाधन केंद्र में हैं ।

तकनीक संसाधन केन्द्र – आवास और भोजनालय

ऐसा कहा जा सकता है कि ग्रामीण विकास के लिए जरूरी शायद ही ऐसा कोई क्षेत्र हो, जिसकी रूपरेखा केन्द्र ने तैयार न की हो ।

5. विवेकानंद केंद्र के महासचिव श्री. ए. बालकृष्णन् से बातचीत

केंद्र का मुख्य उद्देश्य व गतिविधियां क्या हैं?

कन्याकुमारी में स्वामी विवेकानंद को आत्मज्ञान की प्राप्ति हुई ।''मानवता की सेवा ही सच्ची ईश्वर सेवा है'', यह ज्ञान उन्होंने प्राप्त किया । विवेकानंद केंद्र की स्थापना के पीछे भी यही उद्देश्य है । त्याग और सेवा के माध्यम से मानव का निर्माण और राष्ट्र के पुनरुत्थान को केंद्र ने अपना ध्येय बनाया है । केंद्र की गतिविधियां मुख्यत: शिक्षा, योग, ग्रामविकास,पर्यावरण-सुधार,सांस्कृतिक विकास के साथ ही महिला एवम् बाल विकास के क्षेत्र में चल रही हैं। केंद्र अपने मुख्य उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए पहले कार्यकर्ता तैयार करता है और फिर उन्हें सेवा कार्य में लगाता है । इस तरह हम मानव निर्माण और मानव सेवा दोनों कार्य साथ-साथ कर रहे हैं ।

विकास के संदर्भ में केंद्र की क्या धारणा है?

हमारे देश में एक धारणा काफी मजबूती से जड़ें जमा चुकी है कि समाज के उत्थान या विकास की जिम्मेदारी सरकार और नेताओं की है । नेता इसे प्रोत्साहित भी करते हैं । हर बार चुनाव के समय वह अनेकों आश्वासन देकर जाते हैं और जनता बाद में हर काम के लिए उनकी बाट जोहती रहती है । विवेकानंद केंद्र ने इस अवधारणा के विपरीत विकास के हर काम में लोगों की भागीदारी सुनिश्चित करने का प्रयास किया है । चाहे वह बालवाड़ी खोलने का मामला हो या ऊरनी के जीर्णोद्धार का । किसी भी गांव में बालवाड़ी स्थापित करने से पहले कोशिश की जाती है कि कम से कम बच्चों के बैठने के लिए भवन का निर्माण गांववाले खुद करें ।

विकास में लोगों का सहभाग तो समझा जा सकता है लेकिन उसकी दिशा के बारे में आप क्या सोचते हैं?

मानव ने अपने विकास के लिये प्रकृति की बलि देकर बहुत ही बड़ी कीमत अदा की है । प्राकृतिक संसाधन अक्षय है और अपने वश में हैं, ऐसी गलतफहमी अभी तक थी । लेकिन अब आदमी को यह समझ आ रही है की हम पूरे श्रृंखला की एक कडी हैं - हम और निसर्ग एक दूसरे से जुड़े हुए हैं और इसलिये अक्षय विकास तभी संभव होगा जब हम निसर्ग पर काबू नहीं, तो उसका दोहन करेंगे ।

यह कैसा संभव होगा?

इसके लिये सर्वप्रथम मानसिकता में बदलाव होना आवश्यक है । विवेकानंद केंद्र की यह धारणा है कि विकास के मॉडेल में अध्यात्मिकता का पहलू लाना अत्यावश्यक है । यह विचार धारा हमारी संस्कृति, धर्म और तत्वज्ञान पर अधिष्ठित है । इसी विचार

अक्षय विकास

धारा को मूलभूत मानकर नारडेप का तकनीकी संसाधन केंद्र कार्य कर रहा है ।

क्या तमिलनाडु के अलावा और भी कहीं केंद्र का कार्यक्षेत्र या उसकी शाखायें हैं?

भारत के विभिन्न राज्यों में केंद्र की करीब 120 शाखायें हैं । इनमें से अंडमान-निकोबार, अरुणाचल प्रदेश, असम प्रमुख हैं । इसके अलावा उड़ीसा, बिहार के पिछड़े इलाकों में केंद्र की शाखायें हैं ।

केंद्र कई क्षेत्रों में अपनी गतिविधियां चला रहा है । इनमें मुख्य सफलता उसे किस क्षेत्र में मिली है?

शिक्षा के क्षेत्र में केंद्र की उपलब्धि निश्चित ही महत्वपूर्ण है । पूर्वोत्तर के दुर्गम इलाकों में केंद्र के आवासीय स्कूल सफलतापूर्वक चल रहे हैं और इनमें से निकले हुए छात्र आज राष्ट्र निर्माण में कही न कहीं प्रमुख भूमिका निभा रहे हैं । इसी तरह गांवों में बालवाड़ी, प्राथमिक चिकित्सा केंद्र व ग्रामीण विकास के कार्यक्रमों को जनता का भरपूर समर्थन मिल रहा है ।

केंद्र को किन मुख्य स्त्रोतों से सहायता मिल रही है?

ग्रामीण विकास कार्यक्रमों के लिए केंद्र को मुख्यत: कपार्ट से सहायता मिलती रही है । जिला प्रशासन, राज्यसरकार और केंद्र सरकार से भी हमे सहायता मिलती है जैसे बालवाड़ी के लिए केंद्रीय समाज कल्याण बोर्ड और वैकल्पिक ऊर्जा के क्षेत्र में काम के लिए एम.एन.इ.एस. से भी आर्थिक अनुदान केंद्र को मिलता है । केंद्र समय-समय पर प्रमुख औद्योगिक घरानों से भी मदद की अपील करता रहा है और इस संबंध में उसका अनुभव अब तक काफी संतोषजनक है।

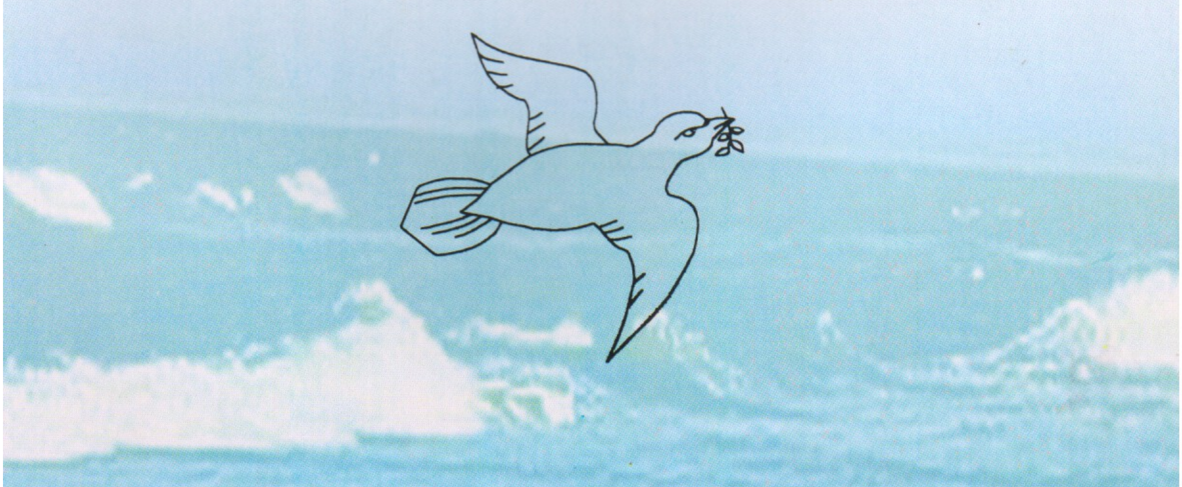

विवेकानंद केंद्र कन्याकुमारी के वर्तमान प्रबंध समिति की सूची:

अध्यक्ष	श्री पी. परमेश्वरन
उपाध्यक्ष	प्रो. के.एन. वास्वानी
प्रधान सचिव	श्री ए. बालाकृष्णन
सहायक सचिव	कुमारी रेखा दवे
सहायक सचिव	श्री प्रवीण दाभोलकर
कोषाध्यक्ष	श्री डी. भानुदास
सदस्य	श्री एस.जी. सुब्रमनियम्
सदस्य	श्री एस. गुरुमूर्ति
सदस्य	डा. एम. लक्ष्मीकुमारी
सदस्य	श्री एस. सम्पत कुमार
सदस्य	श्री टी.एस. कृष्णन
सदस्य	श्री आर.एन. वेंकटरामन
सदस्य	श्री एन. कृष्णमूर्ती
सदस्य	श्री जी. वासुदेव
सदस्य	श्री विश्वास लपालकर
सदस्य	श्री अनिल सरोदे
सदस्य	कुमारी बी. निवेदिता
सदस्य	कुमारी अपर्णा पालकर
सदस्य	कुमारी के शैलजा
सदस्य	श्रीमति एस. शान्ता
सदस्य	श्री किशोर टोकेकर

कपार्ट द्वारा दी गई धन राशि

कुल स्वीकृत परियोजनाएं	31
कुल पूर्ण परियोजनाएं	26
कुल स्वीकृत राशि	1,47,35,997.00
कुल प्राप्त राशि	1,06,56,305.00

(सभी संख्यायें अस्थायी हैं)

विवेकानंद केंद्र - नारडेप
विवेकानंदपुरम्, कन्याकुमारी 629 702
तमिलनाडु

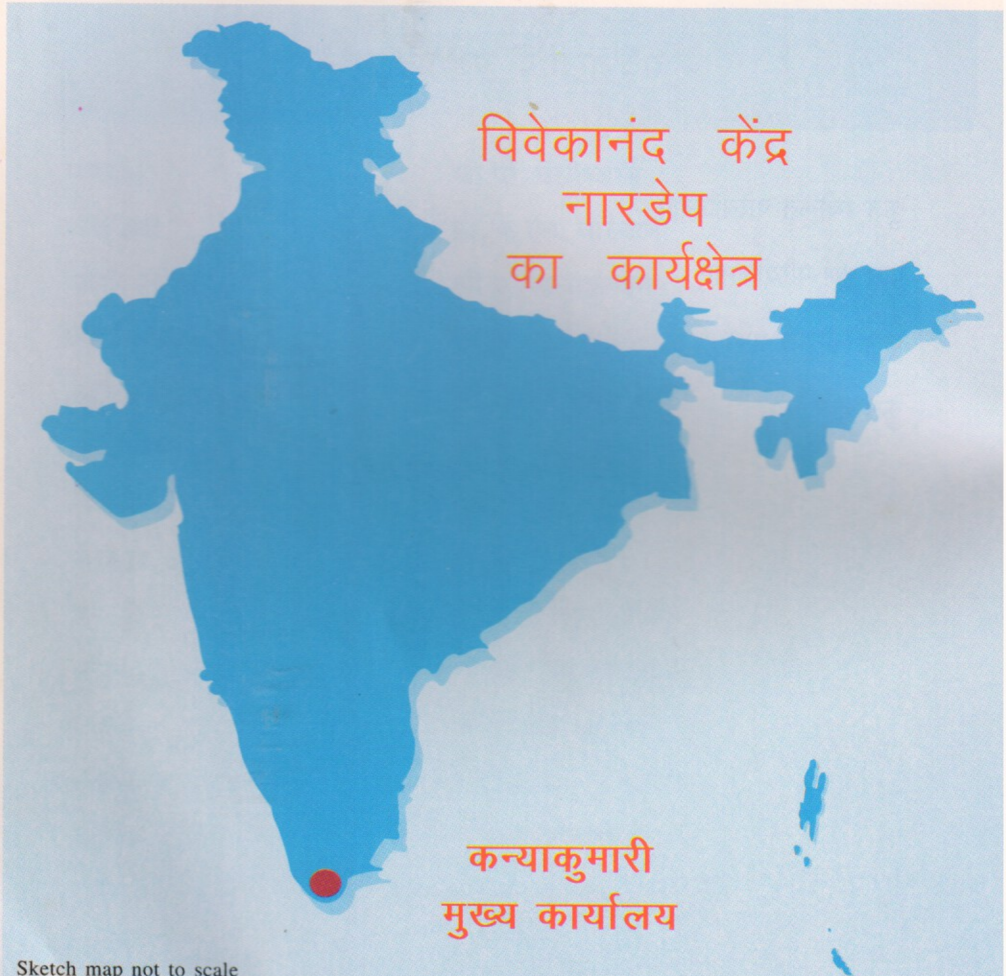

Sketch map not to scale

अधिक जानकारी व सलाह के लिए
कृपया इस पते पर सम्पर्क करें

चिरंजी लाल कटारिया, सहायक निदेशक
कपार्ट
(प्रकाशन विभाग)
जोन–5ए, (कोर सी) द्वितीय तल, भारत पर्यावास केन्द्र
लोदी रोड, नई दिल्ली – 110 003
फोन : 464 2395, फैक्स : 464 8607

लोक कार्यक्रम और ग्रामीण प्रौद्योगिकी विकास परिषद
(ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार के तत्वावधान में)
भारत पर्यावास केन्द्र, जोन–5 ए (कोर–सी) द्वितीयतल
लोदी रोड, नई दिल्ली – 110003
फोन : 464 2395, फैक्स : 464 8607